वेदों की खुशबू ओ३म् वेद सब के लिए

(धर्म मर्यादा फैलाकर लाभ दें संसार को)

VEDIC THOUGHTS

A Perfect Blend of Vedic Values And Modern Thinking

Monthly Magazine	Issue 120	Year 15	Volume 04	September 2023 Chandigarh	Page 24	मासिक पत्रिका Subscription Cost Annual - Rs. 150

भगवान के दर्शन कौन पाता है

जिस के अस्तित्व को हम मानते हैं, जिसे सच्चिदानन्दस्वरूप, सर्वशक्तिमान, सर्वाधार, सर्वेश्वर, मानते हैं। जिसे ही उपासना के योग्य मानते हैं और जिसकी उपासना और अराधना करते है उससे मिलने की चाह स्वभाविक है। यही नही हम उसके अधिक से अधिक नजदीक रहना चाहते हैं। अब प्रश्न उठता है, कौन उसके दर्शन पा सकता है? इसके उत्तर में कहा गया है

पहला,– जिसकी वृतियां सांसारिक विष्यों में लिप्त हैं,ऐसा मनुष्य भगवान को तो क्या अपने आप को भी नहीं देख पाता। ऐसा इस लिये हैं, क्योकि चित की वृतियां उसे भटकाती फिरती हैं, कभी एक वस्तु में तो कभी दूसरी वस्तु में ले जाती हैं। मन की तेज

Contact:
BHARTENDU SOOD
Editor, Publisher & Printer
231, Sec. 45-A, Chandigarh 160047
Tel. 0172-2662870 (M) 9217970381,
E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

POSTAL REGN. NO. G/CHD/0154/2022-2024

आर्य संदेश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधी सभा
15- हनुमान रोड
नई दिल्ली -110001

रफतार, आत्मा को परमात्मा से नहीं मिलने दे रही। जब आत्मा, परमात्मा से दूर है ऐसे में भगवान के दर्शन नहीं हो सकते। दूसरा–जिसका ईश्वर में पूर्ण विश्वास है व सर्म्पण है। जिसका ईश्वर में पूर्ण विश्वास नहीं वह कभी भी ईश्वर को नहीं पा सकता।

अत ऐव भगवान के दर्शन वही कर सकता है जिस ने चित की वृतियों को और मन को अभ्यास व वैराग्य द्वारा वश में किया हुआ है व जिसका ईश्वर में पूर्ण विश्वास है।

कठापनिषद में कहा है–––जो ज्ञानवान नहीं है, जिसका मन व इन्द्रियां जिसके वश में नहीं हैं वह भगवान के दर्शन नहीं कर सकता अपितु जन्म मरण के चक्र में ही रहेगा।

संसार में अधिक संख्या उन लोगों की है जो आत्म बल से वंचित है व प्रमाद और आलस्य में फसें हुये हैं वे इस शरीर को ही सब कुछ समझते हैं और इस की पूजा में लगे रहते हैं, जिन्होने यह निश्चय कर रखा है जैसे भी हो धन कमाओ और खाते कमाते ही मर जाओ, जिनको इतना भी ज्ञान नहीं है कि जो चीज़ बनी है वह समाप्त भी होगी, ऐसे लोग न तो आत्म दर्शन कर सकते है और न ही भगवान के दर्शन।

जिसका व्यवहार दूसरों के प्रति क्रूरता, दम्भ और छल कपट का है, जिनकी वाणी वश में नहीं है, जो ईश्या द्वेश की आग में जल रहें हैं, ऐसे लोग भी भगवान को नहीं पा सकते।

प्रभु दर्शन वही कर सकते हैं जो आत्मबल बढ़ाने के लिये ब्रहमचार्य का पालन करते हैं। जो अहिंसा व सत्य के मार्ग पर चलते हैं। जो संसार के पदार्थो को अपने जीवन की यात्रा का एक साधन मानते हैं। वासना की आग को वैराग्य की राख से दबा कर रखते हैं। जिनका मन शान्त है व अंहकार जिन से कोसों दूर है। जो शरीर से स्वस्थ है। महोपनिषद में लिखा है–––यह संसार वासनारूपी जल से भरा हुआ है परन्तु हे मनुष्य तू ज्ञानरूपी नौका में सवार होकर पार जा सकता हैं ऐसा ज्ञान जो तुझे चित की वृतियां और प्रमाद व आलस्य से बचाय रखे।

यह भी सत्य है न तो कोई दुनिया को छोड़ सकता है न दुनिया किसी को छाड़ती है। प्रयतन यह होना चाहिये कि दुनिया के सारे वयवहार करते हुये अपनी वृति को इसके जाल में फंसने न दिया जाये।

तुलसी ने इस बात को बहुत सुन्दर कहा है,

तुलसी जग में यों रहो,
त्यों रसना मुख माहि।
खाती है घी तेल नित,
फिर भी चिकनी नाहीं

इस विषयों से भरे संसार में वैसे ही रहें जैसे मुंह के अन्दर जिबहा है। वह तेल घी सब खती है, फिर भी उस पर चिकनाहट नहीं आती।

भगवान कृष्ण अर्जुन से कहतें हैं जो चित योगाभ्याास से युक्त है वह वृतियां और प्रमाद व आलस्य पर विजय पाता हुआ परम दिव्य पुरूष को प्राप्त होता हैं।

Two roads diverged in a wood,
And I took the one less travelled by.
And that has made all the difference..
American poet Robert Frost

पत्रिका में दिये गये विचारो के लिए लेखक स्वयं जिम्मेवार है। लेखको के टेलीफोन न. दिए गए है न्यायिक मामलो के लिए चण्डीगढ़ के न्यायलय मानय है।

WANTED BRIDE

for a Hindu Khatri, CA 29 years 6 feet fair colour, working in a reputed firm at Chandigarh. Arya Samaj family and pure vegetarian. Living in Chandigarh Tricity will be preferred

Contact - 8146931916 (Ashok Chopra)

शिमला का **SHARDA**

कामधेनु जल

गैस ऐसिडिटी व पेट के विकारों के लिए एक असरदार व अदभुत आयुर्वैदिक औषधि

एक बोतल कई महीनों चले । फोन : 9465680686 9217970381

पत्रिका के लिये शुल्क

सालाना शुल्क 150 रूपये है, शुल्क कैसे दें

1. आप 9217970381 या 0172–2662870 पर subscribe करने की सूचना दे दें। PIN CODE अवश्य दे
2. **आप चैक या कैश निम्न बैंक मे जमा करवा सकते हैं :–**
   Vedic thoughts, Central bank of India A/C No. 3112975979 **IFC Code - CBIN0280414**
   Bhartendu soood, IDBI Bank - 0272104000055550 **IFC Code - IBKL0000272**
   Bhartendu Sood, Punjab & Sindh Bank - 02421000021195, **IFC Code - PSIB0000242**
3. आप मनीआर्डर या at par का Cheque द्वारा निम्न पते पर भेज सकते है। H. No. 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047.
4. दो साल से अधिक का शुल्क या किसी भी तरह का दान व अनुदान न भेजें। शुल्क तभी दें अगर पत्रिका अच्छी लाभप्रद व रूचिकर लगे।

यदि आप बैंक में जमा नहीं करवा सकते तो कृपया at par का चैक भेज दे।

या Google Pay No. 9465680686 या Paytm No. 9465680686

Good parenting makes a big difference

Neela Sood

This dates back to 1990. In the Gurukul located at Deena Nagar , Gurdaspur District, the teachers and the students used to assemble for a weekly Satsang on every Sunday where they'd get an opportunity to listen to a Vedic scholar. On one such day, **Swami Swatantranand the founder of Dina Nath Math near Gurdaspur and an erudite Vedic scholar** treated the assembly with an interesting anecdote; something like this --"One of my disciples was a retired *Tehsildar* who enjoyed the reputation of being utterly honest. I couldn't refrain myself from asking him how he could resist taking bribes in the job in which money flowed even if one didn't demand. "

Tehsildar, though, was a bit uncomfortable with the question but after a pause he decided to tell his story which was like this--- "My widowed mother struggled to teach me up to Middle Standard by cleaning utensils in the house of village Head. Fortunately, I was selected as Patwari and moved to a city. Money would come even without my asking. Hardly a month had passed when I sent Rs 40 from my savings to my mother who got suspicious of my source of earning since Rs 40 was a big amount at that time considering Patwari's measly salary. She sent back the entire amount to me by money order with a message that if she knew her son would become a corrupt official she'd not have struggled to give him education. I felt ashamed and jolted. I returned back the money to the persons who had bribed me and took the pledge that I'd live on honestly earned money."

We still have many amongst us who are honest and a few are utterly honest with unimpeachable integrity. If asked, the majority of them will tell that they have come to value the virtue of honesty in public life because of the good school of thoughts they were exposed to as a child and most of the times it was the conduct of their parents which left an everlasting influence on them. Honesty is extolled as the cardinal principle of dharma and all religions and seers speak of its paramount importance in making the human life pure and virtuous. We all need to value honesty and teach lessons in honesty to our children with our own conduct since honesty begins at home.

100 वां जन्मदिन स्मरण

1923-1999

डॉ. भूपिंदर नाथ सूद (शिमला)
शिमला के कामधेनु जल के संस्थापक

हममें व्यावसायिक नैतिकता और जीवन के मूल्यों को स्थापित करने के लिए हम आपके आभारी हैं। आप हमारे लिए प्रेरणास्रोत बने रहेंगे

शारदा हर्बल लेबोरेटरीज, शिमला, भारतेंदु सूद और परिवार
फोन: 9217970381, 9465680686

आप भी अपने परिवार के सदस्यों के स्मरण (Remembrance) दे सकते है।

रू.२५०/-

for quarter page with photo

9217970381

9465680686

उपनिषदों के महत्त्वपूर्ण उपदेश

सुप्रसिद्ध आर्य विद्वान श्री कृष्ण चन्द्र गर्ग समय समय पर वेदों पर अधारित पुस्तकें लिखतें रहते हैं। यह मेरा व वैदिक थोटस का सौगाग्य है कि वह हमें अपनी पुस्तके भेजते रहते है। अभी हाल में ही नवीन पुस्तक लिखी है " उपनिषदों के महत्वपूर्ण सन्देश " इस नवीन पुस्तक में उन्होने उपनिषदों के मन्त्रों को बहुत सरल भाषा में पाठकों के लिए दिया है । इसे हम अपने आने वाले संस्करणों में देते रहेंगे।

अनुपश्य यथा पूर्वे प्रतिपश्य तथा अपरे।
सस्यमिव मर्त्यः पच्यते सस्यमिव आजायते पुनः।। **(कठोपनिषद)**

अर्थ – जो तुझसे पहले हो चुके हैं उन्हें देख, जो तेरे बाद में होंगे उनकी बाबत विचार कर। यह मरणशील मनुष्य अन्न की तरह पैदा होता है, पकता है, नष्ट हो जाता है और फिर उत्पन्न हो जाता है।

सर्वे वेदा यत् पदम् आमनन्ति तपांसि सर्वाणि च यद् वदन्ति।
यद् इच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति तत् ते पदम् संग्रहेण ब्रवीमि ओम् इति एतत्।।
(कठ उपनिषद)

अर्थ – जिस पद (शब्द) का सब वेद बार–बार वर्णन करते हैं, जिसे जानने के लिए सब तप किए जाते हैं, जिसकी चाहना में यति लोग ब्रह्मचर्य का पालन करते हैं, वह पद संक्षेप में तुझे बताता हूँ, वह पद 'ओम्' है।

एष सर्वेषु भूतेषु गूढ़ोत्मा न प्रकाशते।
दृश्यते तु अग्रयया बुद्धया सूक्ष्मया सूक्ष्मदर्शिभिः।। **(कठोपनिषद)**

अर्थ – परमात्मा सारी जड़ चेतन सृष्टि में छिपा हुआ है, वह सामने नहीं है। सूक्ष्य दृष्टि वाले लोग अपनी तीव्र और सूक्ष्म बुद्धि से उसे देखते हैं, जानते हैं।

असतो मा सद् गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्मा अमृतं गमय।
(बृहदारण्यक उपनिषद, प्रथम अध्याय-तीसरा ब्राह्मण)

अर्थ – हे ईश्वर! आप मुझे गलत रास्ते से हटाकर ठीक मार्ग पर ले चलिए। अविद्या अन्धकार से छुड़ाकर विद्या रूप प्रकाश को प्राप्त कराईए। मृत्यु रोग से बचाकर मोक्ष रूप अमृत को दीजिए।

न संदृशे तिष्ठति रूपमस्य न चक्षुषा पश्यति कश्चन एनं।
हृदा हृदिस्थं मनसा य एनं एवं विदुः अमृताः ते भवन्ति।।
(श्वेताश्वतर उपनिषद)

अर्थ – परमात्मा का कोई रूप (आकृति, वर्ण, स्वरूप) नहीं जिसे आंखों से देखा जा सके। इसलिए उसे काई भी आखों से नहीं देखता। वह हृदय में स्थित है। जो उसे हृदय से तथा मन से जान लेते हैं वे आनन्द को प्राप्त करते हैं।

नैव स्त्री न पुमान् एष न च एव नपुंसकः।
यद् यद् शरीरम् आदत्ते तेन तेन स रक्ष्यते।। (श्वेताश्वतर उपनिषद)

अर्थ – जीवात्मा न स्त्रीलिंगी है, न पुल्लिंगी है और न ही नपुंसक–लिंगी है। ये लिंग शरीर के हैं। जिस जिस शरीर को यह पाता है उस उस के लिंग का कहा जाता है। उदाहरण – पानी का अपना कोई रंग नहीं है, पानी में जो रंग डाला जाता है, पानी उस रंग का कहा जाता है।

न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्रतारकं न इमा विद्युतो भान्ति कुतो अयं अग्निः।।
तमेव भान्तम् अनुभाति सर्वं तस्य भासा सर्वं इदं विभाति।।
(श्वेताश्वतर उपनिषद)

अर्थ – ईश्वर की आभा के सामने सूर्य का प्रकाश फीका पड़ जाता है, चन्द्र और तारे प्रकाशहीन हो जाते हैं, आसमानी बिजलियां भी उसके सामने फीकी हैं, फिर इस आग की तो औकात ही क्या है। उसी के प्रकाश से ये सब प्रकाशित हैं।

ऋग्वेद और अथर्ववेद के कुछ उपदेश

1. **अधः पश्यस्व मोपरि संतरा पादकौ हर।**
मा ते कशप्लकौ दृशन् स्त्री हि ब्रह्म बभूविथ।। (ऋग्वेद 8-33-19)

अर्थ – हे स्त्री! तू नीचे की ओर देख, उ्पर की ओर तांक–झांक मत कर। अच्छी तरह सम्भल कर अपने पैरों को चला। तेरे स्तन दिखाई न दें। स्त्री मनुष्य समाज को रचने वाली है।

2. **स्वस्ति पन्थामनुचरेम सूर्याचन्द्रमसाविव। पुनर्ददताघ्नता जानता सं गमेमहि।।**
(ऋग्वेद 5-51-15)

अर्थ – हम सूर्य और चन्द्र की तरह कल्याणकारी मार्ग पर चलते रहें और दानशील, वैर भाव रहित विद्वान मनुष्यों की संगति करते रहें।

3. **सम्राज्ञी श्वशुरे भव समाज्ञी श्वश्रवां भव।**
ननान्दरि समाज्ञी भव सम्राज्ञी अधि देवृषु।। (ऋग्वेद 10-85-46)

अर्थ – हे वधू! मेरे पिता जी तेरे ससुर हैं उनसे प्रेम पूवर्क व्यवहार करके तू रानी की तरह रह। मेरी माता जी तेरी सास है उससे प्रेमपूर्वक वर्तकर तू रानी बन कर रह। अपनी ननदों और देवरों (मेरे छोटे बड़े भाईयों) के साथ भी प्रेमपूर्वक व्यवहार करके तू रानी की तरह रह।

4. **न स स्वो दक्षो वरुण ध्रुतिः सा सुरा मन्युर्विभीदको अचित्तिः।**
अस्ति ज्यायान् कनीयस उपारे स्वप्नश्च नेदनृतस्य प्रयोता।।
(ऋग्वेद 7-86-6)

अर्थ – मनुष्य केवल अपनी इच्छा से ही पाप कर्म नहीं करता, अपितु कुछ और कारण भी हैं जिनके कारण मनुष्य पाप कर्म कर बैठता है। शराब पीना, अत्याधिक क्रोध करना, जुआ खेलना, अज्ञान, असावधानी, बड़ों द्वारा छोटों को पाप कर्म करने का आदेश देना, स्वप्न, आलस्य – इनके कारण भी मनुष्य पाप कर्म करता है।

5. **परोपेहि मनस्पाप किमशस्तानि शंससि।**
परेहि न त्वां कामये वृक्षां वनानि संचर गृहेषु गोषु मे मनः।।
(अथर्ववेद 6-45-1)

अर्थ – ऐ मेरे मन के बुरे विचार! तू दूर हट जा। बुरे कार्यों को तू अच्छा क्यों समझता है, मैं तुझे नहीं चाहता, तू दूर पेड़ों में जंगलों में चला जा। मेरा मन तो घर में और गायों में लगा हुआ है।

6. **परोऽपेह्यसमृद्धे वि ते हेतिं न्यामसि। वेद त्वाहं निर्मीवन्तीं नितुदन्तीमराते।।**
(अथर्ववेद 5-7-7)

अर्थ – ओ दरिद्रता! तू दूर चली जा। हम तेरे उस पर वज्र से प्रहार करते हैं। हम जानते हैं कि तू सब प्रकार से निर्बल करने वाली है और अनेक प्रकार से पीड़ा देने वाली है।

6. **यथा वातश्च्यावयति भूम्या रेणुमन्तरिक्षाच्चाभ्रम्।**
एवा मत् सर्वं दुर्भूतं ब्रह्मनुत्तमपायति।। (अथर्ववेद 10-1-13)

अर्थ – जैसे वायु भूमि से धूल और आकाश से बादलों को उड़ा देती है वैसे ही ज्ञान द्वारा मेरे सब दुष्ट भाव दूर हो जाए।

कृष्ण चन्द्र गर्ग
0172-4010679
kcg831@yahoo.com

✪☆✪

डी ए वी व आर्य समाज संस्थाओं ने अपने श्रीनगर के स्कूल को 33 साल बाद अपने कब्जे में फिर से लिया

इस स्कूल की खास बात यह है कि यहां गरीब विद्यार्थियों से कोई फीस नहीं ली जाती। माता पिता अपनी इच्छा से देते है। यहां यह बताना आवश्यक होगा कि भारतवर्ष के पहले मुख्य न्यायधीश, व बहुत ही समर्पित आर्य समाजी श्री जसटिस मेहर चन्द महाजन इस पद को लेने से पहले काश्मीर के गवर्नर थे।

SRINAGAR SCHOOL REOPENS AFTER 33 YRS

HEARTENING REVIVAL: Students arrive at DAV School in Srinagar, which opened recently after being shut down 33 years ago with the eruption of militancy in J&K. After its closure, the building was taken over by a local man in 1992 and he established a private institute named Naqshbandi Public School, reports **Saleem Pandit.** However, the school was later reclaimed by the Arya Samaj Trust after a legal battle. The school has 35 students from underprivileged families and does not charge any fees, although parents voluntarily contribute Rs 500 a month. The principal, a Lucknow native who chose not to be named, said, 'Initially, when we approached residents, they were hesitant to send their children to this school. However, in the end, they agreed'

Prayer is for our own good

Bhartendu Sood.

Once, a disciple asked his preceptor, "Does God becomes more kind when we pray to Him?" His Guru, who was a learned scholar of Vedas, said, "God is always kind. Neither He becomes more generous to the one who remember him nor does He develop a feeling of hostility towards the people who are atheists or are not submitted to Him. He is above such emotions and protects all creatures on this earth. He is 'Just' and rewards everybody the fruit of his deeds without making any concession to those who worship Him. If our deeds are noble we will be positively rewarded i.e. we will get happiness and if our deeds are sordid we will be punished and in that case no amount of prayer and supplications can lessen the punishment."

Continuing he said, " If He starts pardoning the sins of those who after committing crimes take His shelter, crimes will multiply and there will be a jungle raj."

This sent the disciple into tizzy. After a while he said, "Guru Dev, if He remains unmoved by the prayer and the one who worships Him is not rewarded for his prayers then why should we remember him or offer prayers?"

Mahatma smiled and said, "My dear son, we worship Him or commune (Upsana) with God to improve the quality of our own acts. When we start coming close to God with our Upasana, we are filled up with divine ecstasy. The soul rids itself of all impurities, sorrows and shortcomings and its nature, attributes and character becomes pure like that of God, just as a man shivering from cold ceases to suffer by coming close to fire. Once a man is able to acquire His attributes like- mercifulness, kindness, compassion, to act fair and just, to be a source of happiness to others etc. etc, the quality of his actions and life automatically improves which brings an eternal bliss to him. Probably you must have experienced that sometimes we come across such noble souls after meeting them, a spontaneous reaction is -It looks as if God himself has descended on the earth. But the fact remains that such noble souls are those persons who with their Upasana attain the attributes of God and become a source of happiness to others. Now, probably you must have understood that when we offer prayers to God, it is not to make Him happy or to oblige Him but to become ourselves happy and to acquire such attributes which improve the quality of our acts, which in turn makes our lives wholesome. Similarly, the performance of Pooja or Yagana before we start some important project, gives us a feeling that some divine power is with us in our efforts. It imparts the much needed impetus to our work. But God rewards the efforts even when we don't perform such rituals. He is the Sovereign Lord of the Universe and not of only those who remember Him."

9217970381

हे मनुष्य जुआ मत खेल! खेती कर!

डॉ. विवेक आर्य

महाभारत में द्रौपदी चीर–हरण का प्रसारण हुआ। हम महाभारत के यक्ष–युधिष्ठिर संवाद आदि का अवलोकन करते हैं, तो युधिष्ठिर एक बुद्धिमान व्यक्ति के रूप में प्रतीत होते हैं। जब महाभारत में उन्हें जुआ खेलता पाते हैं, तो एक बुद्धिमान व्यक्ति को एक ऐसे दोष से ग्रसित पाते हैं जिसने न जाने कितने परिवारों को सदा के लिए नष्ट कर दिया।

पांडवों और कौरवों के मध्य महाभारत का युद्ध भी इसी जुए की लत के कारण हुआ था, जिससे देश को अत्यंत हानि हुई थी। **स्वामी दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश में स्पष्ट रूप से यही लिखते है कि देश में वैदिक धर्म के लोप का काल महाभारत के काल से पहले आरम्भ हुआ था।** यह जुआ कांड और भाई भाई का वैमनस्य उसी का प्रतीक है। ईश्वरीय वाणी वेदों में जुआ खेलने को स्पष्ट रूप से निषेध किया गया है।

ऋग्वेद के 10 मंडल के 34 वें सूक्त को "कितव" सूक्त के नाम से जाना जाता है। इस सूक्त में कर्मण्य जीवन का उपदेश दिया गया है। वेद इस सूक्त के माध्यम से मनुष्य को आंतरिक दुर्बलताओं और अधोगामी सामाजिक प्रवृतियों से लड़ने का उपदेश भी देते हैं। 'कितव' का अर्थ होता है जुआरी। इस सूक्त के प्रथम 14 मन्त्रों में वेद में एक जुआरी की हीनता, दयनीय पारिवारिक दशा का, उसकी पराजय मनोवृति का बड़ा ही प्रेरणादायक चित्रण किया है।

प्रथम मंत्र में जुआरी कहता है कि चौसर के फलक पर बार बार नाचते हुए ये जुएं के पासे मेरे मन को मादकता से भर देते हैं, जिसके कारण बार–बार इच्छा होते हुए भी मैं यह व्यसन छोड़ नहीं पाता। पासों के शोर को सुनकर स्वयं को रोक पाना मेरे लिए कठिन है। मंत्र 2 में आया है कि एक जुआरी सब कुछ छोड़ सकता है। यहाँ तक की अपनी सेवा करने वाली गुणवान और प्रिय पत्नी तक को छोड़ देता है। पर यह जुआ उससे नहीं छूटता। जब जुए का नशा उतरता है, तब अपनी पत्नी के परित्याग का उसे पश्चाताप होता है। जुआ खेलने के कारण परिवार में उसका कोई सम्मान नहीं करता। उसकी हेय दशा इसी जुएं के कारण हुई है।

तीसरे मन्त्र में एक जुआरी अपने किये पर पश्चाताप करता हुआ सोचता है कि उसकी सास उसकी निंदा करती है, पत्नी घर में घुसने नहीं देती। आवश्यकता होने पर भी कोई रिश्तेदार या सम्बन्धी मुझे धन नहीं देता। लोग सहायता न देने के लिए अलग अलग बहाने बनाते है, क्यूंकि सभी यह सोचते है कि यह धन जुआ खेलने में लगा देगा। वृद्ध मनुष्य का बाज़ार में जैसे कोई लाभ नहीं रहता वैसी ही हालत एक जुआरी की होती है। चौथे मंत्र में आया है

कि जुआरी के साथ साथ उसकी पत्नी का भी मान चला जाता हैं। जुए में हारने पर आखिर में एक जुआरी अपनी पत्नी को दाव पर लगा देता है, तो उसकी पत्नी का भी अन्य लोग अपमान करते हैं।

इस सूक्त के नौवें मन्त्र में जुएं के पासों का सजीव और काव्यात्मक चित्रण है। इसमें लिखा है

कि यद्यपि पासे नीचे चौसर पर रहते है, पर उछलते हैं तब अपना प्रभाव दिखाते हैं। जुआरियों के हृद में हर्ष–विवाद आदि भावों की सृष्टि करते हैं। उनके अर्थात जूए के त्याग के लाभ का ऋषि वर्णन करते हैं– "हे मनुष्य जुआ मत खेल! खेती कर! परिश्रम और श्रम से कमाये गए धन को सब कुछ मान। उसी में संतोष और सुख का अनुभव कर। पुरुषार्थ से तुम्हें अमृत तुल्य दूध देने वाली गौ मिलेगी। पति परायण सेवा करने वाली पत्नी मिलेगी। परमात्मा भी उसके

अनुकूल सुख देगा।" न युधिष्ठिर ने जुआ खेला होता। न महाभारत का युद्ध होता। न देश का पतन होता। इसलिए हे देशवासियों जुआ, क्रिकेट सट्टा आदि दोषों से सदा दूर रहिये।

मस्तक को जीतने पर ऊँचा कर देते हैं और हारने पर झुका देते हैं। ये बिना हाथ वाले हैं, फिर भी हाथ वालों को पराजित कर देते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि ये पासें अंगारे हैं जिन्हें कभी बुझाया नहीं जा सकता। ये शीतल होते हुए भी पराजित जुआरी के हृदय को दग्ध कर देते हैं।

दसवें मंत्र में जुआरी के परिवार की दशा का अत्यंत मार्मिक वर्णन है। धन आदि साधनों से वंचित और पति द्वारा उपेक्षित जुआरी की पत्नी दुःखी रहती है। वह अपनी और संतान की दशा पर विलाप करती हैं। ऋण के बोझ तले दबा जुआरी आय से वंचित होकर कर्ज चुकाने के लिए रात में अन्यों के घरों में चोरी करने लगता है।

11वें मंत्र में आया है कि दूसरे के घर में सजी–धजी और सुख संपन्न स्त्रियों को देखकर और अपनी हीन–दुःखी स्त्री और टूटे फूटे घर की अवस्था देखकर जुआरी का चित व्यथित हो उठता है। वह निश्चय करता है कि अब मैं प्रातःकाल से पुरुषार्थ से जीवन यापन करूँगा।

सही मार्ग पर चलकर अपने पारिवारिक जीवन को सुख और समृद्धि से युक्त करूँगा। यही संकल्प लेकर वह प्रायः कह देता है कि अब कभी जुआ नहीं खेलेगा, क्यूंकि जूआ खेलने की प्रवृति उसे निकम्मा बना देती है और उसके पतन का कारण बनती है।

इसीलिए

13 मन्त्र में इस सूक्त की अर्थात जूए के त्याग के लाभ का ऋषि वर्णन करते

हैं– "हे मनुष्य जुआ मत खेल! खेती कर! परिश्रम और श्रम से कमाये गए धन को सब कुछ मान। उसी में संतोष और सुख का अनुभव कर। पुरुषार्थ से तुम्हें अमृत तुल्य दूध देने वाली गौ मिलेगी। पति परायण सेवा करने वाली पत्नी मिलेगी। परमात्मा भी उसके अनुकूल सुख देगा।" न युधिष्ठिर ने जुआ खेला होता। न महाभारत का युद्ध होता। न देश का पतन होता। इसलिए हे देशवासियों जुआ, क्रिकेट सट्टा आदि दोषों से सदा दूर रहिये।

अंतिम 14 वें मंत्र में जुआ छोड़ने के पश्चात अपने अन्य जुआरी मित्रों को भी जुए के त्याग के

लिए प्रेरित करे, ऐसा सन्देश दिया गया है। हमारे समाज में हम चारों ओर देखे, तो हम पाएंगे कि वेद में जो दशा एक जुआरी की, उसके परिवार की बताई गई है वह नितांत सत्य है। एक राजा का कर्तव्य समाज की नशा, दुर्व्यसन आदि से रक्षा करना भी है। इसलिए वेदों की अत्यंत मार्मिक अपील को दरकिनार कर सरकार को जुआ, सट्टेबाजी आदि से समाज की रक्षा करनी चाहिए।

Maharishi Dayanand And Arya Samaj Leadership

Bhartendu Sood.

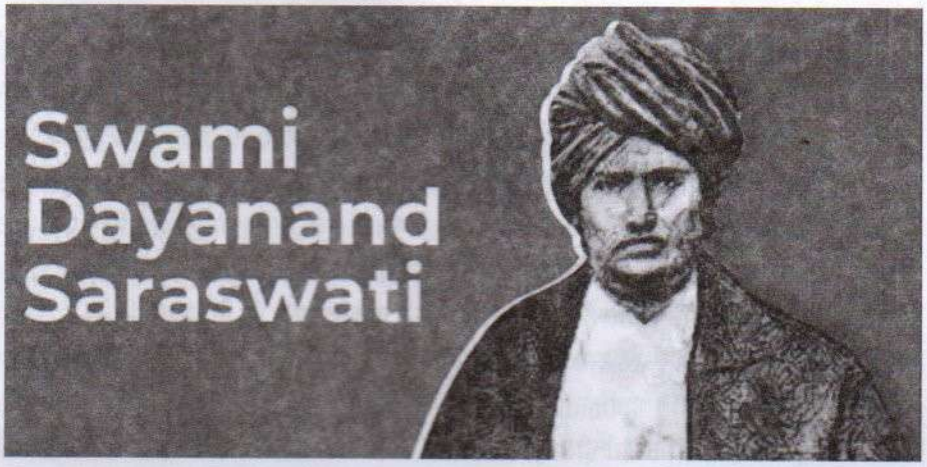

Now when we are amidst celebrations of 200th birthday of Maharishi Dayanand, it is very important for the Arya Samaj leadership to examine its role and make necessary corrections in the interest of Arya Samaj.

As a humble follower of Maharishi Dayanand Saraswati, I will like RSS, VHP and other Govt. patronized Swamis to leave Arya Samaj alone for its good. While RSS leaders try to saffornize it , the leaders with pro Congress inclination try to secularize it and in both the cases the original philosophy of Arya Samaj gets eclipsed and bruised. Maharishi Dayanand Saraswati, the founder of Arya Samaj, had visualized Arya Samaj as a congregation of good people who believed in Vedic teachings. The ten principles he made for the functioning of Arya Samaj, clearly demonstrate that his religious doctrine transcends geographical boundaries and various castes, religions and faiths. To support the same, I am reproducing the sixth principle which says, **"doing good to the whole world is the primary objective of Arya Samaj."** Again the teachings of Vedas, which Swami Dayanad expected every Arya Samaji, to follow in word and spirit are for the entire humanity. The words Hindu, Muslim, Christian or Sikh do not find any mention in Vedas and all teachings are directed to Manav-Man. Here the meaning of the word Manav is the one who does everything after giving a good amount of thought and weighs the adverse implication his actions can have on others.

Two Vedic hymns ***" Manurbhav" and "Vasudaiva Kutumbakam"*** express the sentiments of Maharishi Dayanand's teachings. The simple meaning of these hymns is- Be a Man and consider entire World as your family.

Again we should remember that whatever the great person preaches or writes, it is in the context of the situation prevailing at that time. Their writings shouldn't be tampered with. If any one differs then he has every right to come out with his own books containing his thoughts on the subject.

Unfortunately present day leadership of Arya Samaj, because of their political aspirations and affiliations for their vested interests, has totally drifted from the teachings of Vedas and Swami Dayanand and in the process, Mahrishi Dayanand Saraswati, who is credited with having revolutionized Hindu religion in the nineteenth century to rid it from various evils and ushered in the path of reforms in line with the Vedas, is a highly misunderstood person. **All I can say is that noble souls like Dayanand Sarswati tread on this soil once in centuries. To understand Swami Dayanand Saraswati one should read his magnum opus " Satyartha Prakash " Our Vedas, Upnishadas and Satyartha Prakash are very rich in values and thoughts. Let us glorify what is contained in these sacred books**

9217970381

धैर्य के अभाव में असंभव है प्राप्ति का वास्तविक आनंद

सीताराम गुप्ता

महाभारत की कथा में एक महत्त्वपूर्ण प्रसंग है यक्ष–प्रश्न। पांडवों के वनवास के अंतिम दिनों की घटना है जब वन में उनका सामना यक्ष से हुआ और उसके प्रश्नों का उत्तर दिए बिना सरोवर से पानी पीने के प्रयास में नकुल, सहदेव, अर्जुन और भीम ये चारों भाई मृतप्रायः होकर वहीं गिर पड़े। बाद में युधिश्ठिर ने यक्ष के सभी प्रश्नों का सही–सही उत्तर देकर अपने भाइयों के प्राणों की रक्षा की। यक्ष द्वारा युधिश्ठिर से पूछे गए महत्त्वपूर्ण प्रश्नों में से जो सबसे पहला प्रश्न था वो ये है कि मनुश्य का साथ कौन देता है? युधिश्ठिर ने इस प्रश्न का उत्तर दिया कि धैर्य ही मनुश्य का साथ देता है। वही उसका सबसे अच्छा साथी होता है। उसके उत्तरों से संतुश्ट व प्रसन्न होकर यक्ष ने न केवल युधिश्ठिर के चारों भाइयों को स्वस्थ कर दिया अपितु उन सबको पानी भी पीने दिया। यदि युधिश्ठिर में भी अपने चारों भाइयों की तरह धैर्य व सहिश्णुता का अभाव होता तो वे सब गहन संकट में पड़ सकते थे।

यह पूर्णतः सत्य है कि धैर्य ही मनुश्य का सबसे बड़ा अथवा अच्छा साथी होता है। विशम परिस्थितियों में जब कोई भी उपाय कारगर न हो तो धैर्य धारण करना ही एकमात्र उपाय हो सकता है। धैर्य के अभाव में ही युधिश्ठिर के अन्य चारों भाई संकट में पड़ गए। उनमें न तो यक्ष की बात सुनने व उसके प्रश्नों के उत्तर देने का ही धैर्य था और न ही स्वयं को पानी पीने से रोकने का तनिक धैर्य। विशम परिस्थितियों में यदि हम थोड़ा धैर्य से काम लें तो कुछ समय के उपरांत समस्या को हल करने का कोई न कोई उपाय सूझ ही जाता है। जब हम धैर्य का दामन छोड़कर कोई निर्णय लेने का प्रयास करते हैं तो तनाव के कारण सही निर्णय ले भी नहीं पाते। सही निर्णय अथवा समस्या का सही हल पाने के लिए मनुश्य में धैर्य का होना अनिवार्य है। क्या आज के संदर्भ में भी ये प्रश्न कुछ महत्त्व रखता है? निष्चित रूप से आज भी ये प्रश्न और इसका उत्तर अत्यंत प्रासंगिक है क्योंकि आज तो पूरा विष्व ही धैर्य और सहिश्णुता के अभाव में जी रहा है जिससे अनेकानेक समस्याएँ उत्पन्न हो गई हैं।

कविवर वृंद का एक दोहा है - कारज धीरे होत है, काहे होत अधीर, समय पाय तरुवर फरै केतिक सींचो नीर। धैर्य का महत्त्व बतलाते हुए वृंद इस दोहे में कहते हैं कि हर कार्य एक निश्चित समय पर ही पूर्ण होता है अतः हमें उतावलापन दिखलाने की बजाय धैर्य के साथ उस सही समय के आने की प्रतीक्षा करनी चाहिए। उचित समय अथवा मौसम आने पर ही किसी पेड़ में फूल व फल लगते हैं हमारी बेचैनी से नहीं। किसी पेड़ में बहुत अधिक पानी डालने से भी उसमें समय से पूर्व फूल अथवा फल नहीं लग सकते। कई बार हमारी अधीरता अथवा अधिक उत्साह व तत्परता के कारण कार्य बिगड़ भी जाते हैं। यदि हम शीघ्र फल पाने के उद्देश्य से किसी पेड़ में ज़रूरत से ज्यादा पानी डाल देंगे तो उस पेड़ में शीघ्र फल लगने की अपेक्षा वो पेड़ गलकर खराब भी हो सकता है। इस विषय में कबीर ने भी बिलकुल यही कहा है :

धीरे-धीरे रे मना, धीरे सब कुछ होय,
माली सींचे सौ घड़ा, ऋतु आए फल होय।

इसी प्रकार से यदि हम अच्छी फसल पाने के लिए उसमें अत्यधिक रासायनिक उर्वरक अथवा कीटनाशक आदि डालेंगे तो उसके विषाक्त होने की संभावना बढ़ जाती है। ऐसी फसल से उत्पन्न अन्न हमारा पोषण करने के साथ–साथ हमें बीमार भी कर देगा। हरित क्रांति के दौरान पंजाब के कुछ क्षेत्रों में रासायनिक उर्वरकों व कीटनाशकों का इतना अधिक प्रयोग किया गया कि वहाँ उत्पन्न अन्न के प्रयोग से पूरा क्षेत्र कैंसर की चपेट में आ गया। जीवन के हर क्षेत्र में संतुलन अनिवार्य है और इसके लिए अनिवार्य है कि हम सोच–समझकर कार्य करें। विवेक से काम लें लेकिन धैर्य के अभाव में विवेक से काम लेना संभव ही नहीं अतः जीवन में धैर्य का विकास करना सबसे ज़रूरी चीज़ है। यदि हम इस दोहे को अन्य संदर्भों में भी देखें तो इसके गहरे अर्थ निकल कर आते हैं। हम

सब लोग जीवन में उन्नति करना चाहते हैं और इसके लिए परिश्रम भी बहुत अधिक करते हैं। ये अच्छी बात है।

यदि हम पुरुषार्थ करते हुए समृद्ध होना चाहते हैं तो हम एक दिन अवश्य ही समृद्ध हो जाएँगे इसमें संदेह नहीं लेकिन कुछ लोग जीवन में बहुत जल्दी धनवान अथवा समृद्ध होना चाहते हैं और इसके लिए वे कुछ भी करने को तैयार हो जाते हैं। ग़लत व अनैतिक ही नहीं असंवैधानिक भी। ये कुछ भी करने को तैयार हो जाना ही हमारी सबसे बड़ी भूल होती है। यही हमारे विनाष का कारण बनता है। यदि हम ग़लत तरीके अथवा संसाधन अपनाकर तथाकथित उन्नति प्राप्त कर भी लेते हैं तो हम उस प्राप्ति से उतने आनंदित नहीं हो पाते जितना सहजता से प्राप्त उन्नति से होते है। जिस कार्य से आनंद ही न मिले उसके करने का क्या फ़ायदा? कुछ लोग समृद्धि की इस अंधी दौड़ में न केवल अपना स्वास्थ्य नष्ट कर डालते हैं अपितु अपने आत्मीय जनों से संबंध तक खराब कर लेते हैं। ऐसी प्राप्ति का क्या लाभ? जब भी लगे कि मेरे द्वारा कुछ ग़लत होने जा रहा है स्वयं को तत्क्षण रोक लें। उस कार्य को कुछ देर के लिए टाल दें।

यदि हममें थोड़ा बहुत धैर्य भी होगा तो हम अपने को अवष्य रोक पाएँगे और ग़लती करने से बच जाएँगे। लेकिन धैर्य के विकास के अभाव में ये असंभव है। सफलता के लिए पुरुशार्थ अनिवार्य है लेकिन पुरुशार्थ का प्रभाव भी एक निष्चित समय के उपरांत ही देखने को मिलता है लेकिन आज हममें उतना धैर्य भी नहीं रहा कि उचित समय आने की प्रतीक्षा कर सकें। जब दाल पकने के लिए चूल्हे पर रखते हैं तो उसके पकने या तैयार होने में कुछ समय लगता है। लेकिन हममें उतनी देर तक प्रतीक्षा करने का धैर्य भी नहीं होता और हम बार–बार उसे खोल कर देखते हैं। इससे क्या होता है? क्या दाल जल्दी पक जाती है? नहीं, जल्दी नहीं पकती बल्कि बार–बार बरतन खोलने के कारण अपेक्षाकृत देर से पकती है। बरतन बार–बार खोलने और कड़छी डालने से कई बार ठीक से पकती ही नहीं। हमारी अधीरता अथवा उतावलापन प्रायः बनी–बनाई बातें अथवा काम बिगाड़कर रख देता है अतः हर हाल में धैर्य से काम लेना चाहिए।

वैसे तो कहा गया है कि हम निश्काम कर्म करें। कर्म करें लेकिन फल की इच्छा नहीं। यदि हम निस्स्वार्थ रूप से व निश्काम भाव से कर्म करते हैं तो उसके तो कहने ही क्या हैं? हम निस्स्वार्थ रूप से व निश्काम भाव से कर्म करेंगे तो भी फल की प्राप्ति अवष्य ही होगी। लेकिन फिर भी हम संषयग्रस्त रहते हैं और इसका प्रमुख कारण धैर्य का अभाव ही होता है। उर्दू षायर अमजद हैदराबादी की एक रुबाई है :

कुछ वक़्त से इक बीज शजर होता है,
कुछ रोज़ में इक क़तरा गुहर होता है,

ऐ बंदा–ए–नासुबूर तेरा हर काम,
कुछ देर में होता है मगर होता है।

जब हम कोई बीज बोते हैं तो वो अंकुरित होने के पष्चात बढ़कर कुछ समय में एक पेड़ बन जाता है। एक बीज को पेड़ बनने से कोई नहीं रोक सकता। इसी प्रकार से एक बूँद के सीपी में प्रवेष करने के बाद कुछ दिनों में वो मोती बन जाती है। बूँद के सीपी में प्रवेष करने के बाद उसको भी मोती बनने से कोई नहीं रोक सकता। हर कार्य अपनी एक स्वाभाविक गति से होता है और अवष्य होता है। कहने का तात्पर्य यही है कि मनुश्य का हर काम ही पूरा हो जाता है लेकिन उसमें कुछ समय लग जाता है अतः उतने समय तक प्रतीक्षा करनी चाहिए। कार्य के पूर्ण होते तक धैर्य रखना चाहिए। ये कैसे हो सकता है कि बीज बोते ही वो पेड़ बन जाए और उस पर उसी समय फल भी आ जाएँ। यदि हम किसी पौधे को दूसरी जगह रोपते हैं तो भी पौधे को नई मिट्टी में जड़ें जमाने के लिए कुछ समय चाहिए। इसी प्रकार से मोती बनने की जो प्रक्रिया है उसके पूर्ण होने में भी एक निष्चित समय की आवष्यकता होती है। फिर हम क्यों उतावले व संषयग्रस्त रहते हैं? कारण स्पश्ट है और वो है धैर्य का अभाव।

धैर्य ही नहीं सहजता भी धीरे–धीरे हमसे दूर होती जा रही है। वास्तव में हमें किसी भी स्थिति में जीवन में सहजता का दामन नहीं छोड़ना चाहिए। सहजता में ही वास्तविक आनंद है। जब हम बीजों से पौधे उगाते हैं तो हमें तत्क्षण उनसे पौधे अथवा फूल–फल नहीं मिलते। हमें प्रतीक्षा करनी पड़ती है। और इस क्रम में जब अंत में फूल लगते हैं तो ही नहीं उन पौधों को देखने में भी कम आनंद नहीं आता। और जब फूल खिलते हैं तो उस समय हमारे आनंद की सीमा नहीं रहती। ये आनंद सहजता से उपजता है। जीवन में हम जितने सहज होते जाएँगे उतना ही अधिक आनंद भी प्राप्त कर सकेंगे। एक कली के फूल बनने में भी समय लगता है। किसी कली को देखकर हम प्रायः चाहते हैं कि वह जल्दी से खिलकर फूल बन जाए। हम ऐसा क्यों चाहते हैं? क्या कली का सौंदर्य फूल से कम

होता है? कली में ही नहीं प्रकृति के हर सृजन में सौंदर्य होता है। हमें उस सौंदर्य को देखने व उससे आनंदित होने की क्षमता विकसित करनी होगी और यह सब धैर्य द्वारा ही संभव है।

यदि हर कली आज व इसी क्षण खिल जाएगी तो अगले क्षणों में खिलने के लिए क्या बचेगा? यदि आम के पेड़ पर बौर के बाद बनने वाले छोटे–छोटे सारे फल तोड़ डालेंगे तो पके हुए मधुर व स्वादिश्ट आमों का आनंद कैसे ले पाएँगे? यदि आज ही जीवन के सब सुख भोग लेंगे तो कल क्या करेंगे? आज सब कुछ पा लेने का अर्थ है आने वाले कल अथवा भविष्य को नीरस अथवा सारहीन बनाना। जल्दी से सब कुछ पा लेने का अर्थ है सृजन के आनंद से वंचित होना। असमय सब कुछ पाने का अर्थ है स्वयं को स्वाभाविकता से दूर एक कृत्रिम लोक में ले जाना। माँगते ही चीजें हाथ में आ जाएँ तो चीज़ों का महत्त्व ही क्या रह जाएगा? जब भूख लगी हो तभी भोजन अधिक स्वादिश्ट लगता है। हम प्रायः षिकायत करते हैं कि बच्चे न तो समय पर खाना खाते हैं और न ही ठीक से खाना खाते हैं। कारण भूख न होने पर भी हम उन्हें खिलाने की कोषिष करते हैं। खाने का असली मज़ा तो तब आता है जब भूख लगने पर भी कुछ देर के बाद खाना मिले।

तीन दषक से भी ज़्यादा पुरानी बात है। गरमी की छुट्टियों में घर पर आधा दर्जन बच्चे आए हुए थे। टिंडे की सब्ज़ी बनी हुई थी। बच्चों से जब खाने के लिए कहा गया तो सबने खाना खाने और विषेश रूप से टिंडे की सब्ज़ी से खाना खाने के लिए मना कर दिया। मैंने बच्चों से कहा कि बिलकुल ठीक किया तुमने। टिंडे की सब्ज़ी भी कोई खाने की चीज़ होती है। मैं भी नहीं खाऊँगा। जब कोई दूसरी सब्ज़ी बनेगी तभी खाना खाएँगे। बच्चे खुष हो गए। मैंने उनसे कहा कि जब तक दूसरी सब्ज़ी बनती है तब तक हम खेलते हैं। बच्चों को थोड़ी देर खेलने का समय दिया व उसके बाद पढ़ाई का सिलसिला प्रारंभ हो गया। दो ढाई घंटे से ज़्यादा का समय किस तरह बीत गया पता भी नहीं चला। बच्चे पूरी तरह से थक गए और कहने लगे कि भूख लग आई है। ये कहने पर सभी बच्चों को सलाद के रूप में खीरे और टमाटर खाने को दिए गए। वे सब मिलकर डेढ़ दो किलो के लगभग खीरे और टमाटर चट कर गए। उसके बाद आई खाने की बारी।

खाने में वही टिंडे की सब्ज़ी थी। बच्चे खाने पर ऐसे टूट पड़े जैसे कई दिनों बाद खाना मिला हो। गूंदा हुआ आटा कम पड़ गया। दूसरी बार आटा गूंदना पड़ा। सभी बच्चों ने टिंडे की सब्ज़ी से कई–कई रोटियाँ खाईं। बच्चों ने स्वयं ये कहा कि आज टिंडे की सब्ज़ी बहुत अच्छी बनी है। सब्ज़ी तो वही थी जिसे थोड़ी देर पहले वे खाने को तैयार नहीं थे लेकिन भूख ने सब्ज़ी को स्वादिश्ट बना दिया था। लेकिन इसके लिए थोड़ी देर प्रतीक्षा करनी पड़ी। हम प्रायः प्रतीक्षा नहीं करना चाहते। हम चाहते हैं कि जो सोचा है वो अभी हो जाए। किसी भी चीज़ के लिए थोड़ी प्रतीक्षा उसका आनंद बढ़ा देती है। यदि किसी चीज़ के लिए प्रतीक्षा ही नहीं की तो उसके प्राप्त होने पर असीम प्रसन्नता की प्राप्ति असंभव है। प्रतीक्षा में जो आनंद है वह प्राप्ति में भी संभव नहीं यदि प्रतीक्षा के समय को भी थोड़ा आनंददायक व उपयोगी बनाया जा सके। इसी के लिए धैर्य अपेक्षित है। धैर्य कटु होता है लेकिन कटु औशधि की तरह उसका परिणाम भी सुखद होता है।

हम सब गरम–गरम व ताज़ा बना भोजन करना ही पसंद करते हैं। अच्छी बात है लेकिन यदि हम तवे से उतरते ही रोटी का टुकड़ा तोड़कर मुँह में डाल लें तो क्या होगा? हमारा मुँह जल जाएगा। कई बार गुलाबजामुन किसी बरतन में आँच पर रखे होते हैं और चाषनी में उबल रहे होते हैं। हम प्लेट अथवा दोने में गुलाबजामुन लेते हैं और चम्मच से काटकर सीधे मुँह के हवाले कर देते हैं। ऐसे में जीभ व हलक की जो हालत होती है अधिकांष व्यक्तियों ने उसका अनुभव किया होगा। गरम–गरम खाने में कोई बुराई नहीं लेकिन उतना ही गरम खाना चाहिए जितने से मुँह न जले और आराम से खाया जा सके। इसीलिए कहा जाता है ठंडा करके खाओ। ठंडा करके खाना एक मुहावरा भी है जिसका अर्थ है थोड़ा धैर्य रखना अथवा अस्वाभाविक रूप से कोई कार्य न करना। बहुत अधिक पैसे कमा लिया तो उसका अतिषय प्रदर्षन न करना। कोई कार्य प्रारंभ किया है तो उसके पूर्ण रूप से संपन्न होने तक प्रतीक्षा करना। और इन सब बातों के लिए अपेक्षित मात्रा में धैर्य का पालन करना अनिवार्य है।

ए.डी. 106 सी., पीतमपुरा,
दिल्ली – 110034
मोबा0 नं0 9555622323
Email : srgupta54@yahoo.co.in

Look within you, as you look in the mirror

Bhartendu Sood.

On average, all of us look in the mirror at least ten times in a day. This is desired also simply because it is mirror that tells whether we are presentable or not. There is a poem which reads like this-" I look in the mirror and what do I see ? A pair of eyes look at me and make a silent observation about my physical state. I am grateful to it as it propels me to set right what appears to be disorderly and when it says everything is fine my self confidence gets a boost. Thus the whole purpose of visiting the mirror is that our exterior should give an impression of a person who is pleasing in looks. There is nothing like it, if our appearance lightens up the face of another person

.Once when Mahatma Gandhi was with Guru Ravinder Nath Tagore in Shantiniketan, he found that Gurudev would take unusually long time to dress up before going for a meeting. Mahatma could not refrain himself from commenting, "You take too much time to dress up. Is it worth it? " "Of course, after all it is your physical appearance that strikes any stranger in the first meeting and he must get a good impression of you."replied Gurudev. He was absolutely right, first it is our appearance then it is our conduct. But, if our conduct is found wanting it can undo the impression our appearance had made.

It is also a fact that our conduct is more influenced by our mental state. Therefore, it is as important to look inside to set right if the state of our mind is not in order. When we do this, we save ourselves from indulging in improper conduct which not only hurts the other but in the process we harm ourselves also as it has a potential to strain our relations with others apart from spoiling our own mood.

Say a person got furious because of some incident. There are two options before him. First, he carries the anger and allows it to influence his other activities during the rest of the day. Second, take a break, sit in solitude and meditate for some time to free the mind from the negative thought process.

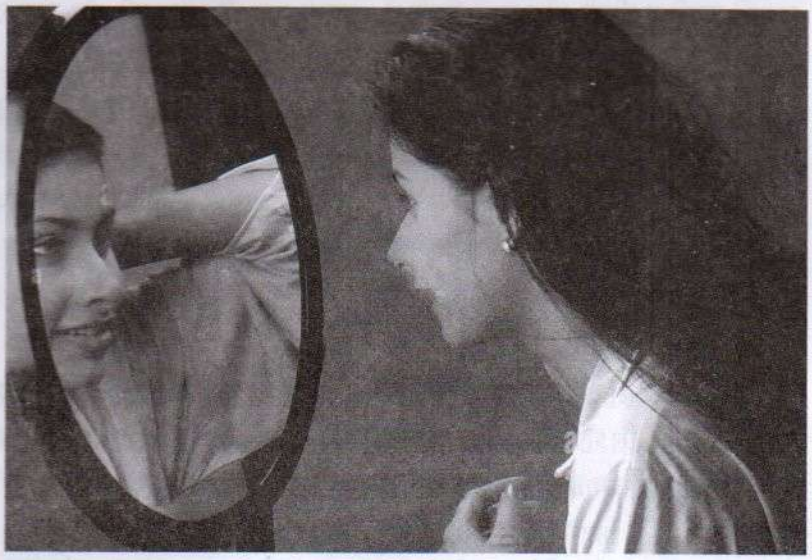

Once while moving with his disciples, Buddha asked one of them to bring water from the nearby pond only to be told by his disciple that water was muddy. He asked his disciple to wait and then go to the pond again. This time the water was clear. Buddha told his disciple that last time when he went the horse cart had just passed leaving the water in the pond turbulent and muddy but after some time the mud had settled leaving the upper water clear. Similarly when confronted with such provocations in day to day life withdraw yourself for some time or engage yourself in some other activity. Act when you feel that the tempers have already cooled.

Four essentials are –take a break, free yourself from all gadgets like mobile phones, move to a lonely and peaceful place , review your inner state and listen to the inner voice.It is also a kind of Yoga which takes its own time. Last of the essentials is that you must believe in some higher self whose communion gives 'viveka' wisdom to you to differentiate between right and wrong.

बुढ़ापे का आनन्द लेने के लिए चील (EAGLE) की भान्ती परिवर्तन शील बने

कहते हैं कि चील का जीवन 70 साल का होता है जो कि उड़ने वाले पक्षियों में सब से अधिक होता है। परन्तु इस आयु को प्राप्त करने के लिए चील पक्षि को बहुत कठिन निर्णय लेने पड़ते है। जब चील पक्षि 40 साल की आयु की होती है तो उसके पंजे जिससे वह अपने आहार के लिय दूसरे पक्षियों व पशुआं का आहार करता है, काम करना बन्द कर देते है। इसकी लम्बी व तीखी चोंच झुक जाती है। उसके पंख भी अंदर की और झुक जाते हैं जिस के कारण उसके लिए उड़ना लगभग असंभव हो जाता है। उस समय चील पक्षि के पास दो ही रास्ते होते हैं, पहला– वह प्राण त्याग दे, दूसरा अपने में परिर्वतन कर ले । यदि वह परिवर्तन करना चाहे तो उसके लिए लगभग 5–6 महीने का समय लग जाता है। इस के लिए जरूरी है कि बूढ़ा चील पक्षि किसी पर्वत की चोटी पर चला जाए। वह अपनी चोच को चटान के साथ मार मार कर खत्म कर देती है। उसके बाद नई चोंच आने का इंतजार करती है। इसके बाद वह अपने पंजो को निकाल देती है। जब पंजे फिर से आ जांए तो वह अपने पुराने परों को निकालना शुरू कर देती हे। कुछ समय बाद नए पर आने लगते है और चील पक्षि का एक तरह से नया जन्म हो जाता है। उस नए जन्म के बाद वह 30 साल और जीता है।

यह परिर्वतन चील पक्षि को इस लिए करना पड़ता है ताकी वह 30 साल का जीवन और जी सके।
इसी तरह यदि हम भी 100 वर्ष तक जीना चाहते है तो हमें भी 50 साल के बाद अपने में परिवर्तन लाने होंगे।
इस में सब से आवश्यक है कि हम पुराने दुखदाई संस्मरणों को भूल जांए अपनी गलत आदतों से छुटकारा पांए और मन की सोच को बदलें। कहने का अर्थ है आज पुरानी राहों पर कोई मझे आवाज न दें।
यदि एक पक्षि लम्बे जीवन के लिए यह सब कुछ कर सकता है तो हम क्यों नहीं।
संसार परिवर्तशील है, हमें भी परिवर्तन को चूमना होगा।
आपको आदर मिलता था, यह तो जवानी की बात है अब बुढ़ापे में आदर देना होगा।
हो सकता है यदि पहले आप को मन पसन्द खाना न मिले तो आप थाली वहीं रखकर अपनी मन पसन्द का खाना बाहर से मंगवा लेते थे परन्तु अब लो भी थाली में मिलता है उसे खाना होगा।

सेवा से बढ़कर पूजा नहीं

मनप्रीत कौर

व्यक्ति कितना भी खुशमिज़ाज हो बीमारी अगर गंभीर व लम्बी हो तो उसकी शक्ती तोड़ कर रख देती है। जिसका असर पूरे परिवार पर पड़ता है।

कई बार ज्यादा बिमार सदस्य को भावनात्मक सहारे कि अधिक आवश्यकता होती है, क्योकि कोई भी छोटी सी बात उसको दुखी कर सकती है। जैसे 'बेचारा' उसे बार बार कहा जाये तो वह यह भी सोचने लगता है कि वह दूसरों से अलग है व भाग्यहीन है।

सेवा को फर्ज समझे

आज के दौर में जब इंसान ज्यादा ज यादा खुदगर्ज व संवेदनहीन होता जा रहा है, बीमार व्यक्ति परिवार की रूखाई और उपेक्षा से टूट कर रह जाता है। अपने लाचार व असहाय हाने का बोध उसे हर पल काटने लगता है। शारीरिक तकलीफ का तन व मन में गहरा तालुक है।

जिस कारण उसे ठीक होने में और अधिक समय लगता है।

चाहे आदमी कितना भी सेहत का खयाल रखता हो, एक स्थिती ऐसी आती है, जब बुढ़ापे में स्वभाविक कमज़ारी या फिर किसी बिमारी के कारण वह दूसरों पर निर्भर हो ही जाता है।

बिस्तर पकड़ लेता है व उसका चलना फिरना मुशकिल हो जाता है। ऐसी हालत में परिवार के युवा सदस्यों का फर्ज़ बपता है कि बुढ़े व्यक्ति की सेवा में कोताही न हेा। उन्हे साचना चाहिये कि आने वाले सालो में जब वे स्वयं उस स्थति में होगें तो अपराध बोध उन्हें चैन नही लेने देगा।

पुण्य के भागी बने

आज जब की छोटे परिवार हैं, बेटी शादी के बाद भी पीहर के परिवार की सदस्य है। भाई न होने पर उस का अपने माता पिता के प्रति भी वैसा ही कर्तव्य है जैसा की सास ससुर के प्रति। उनकी बिमारी में उसको व उसके पति को वैसे ही उनकी देखभाल करनी होगी जैसी कि ऐसे हालात में पति के माता पिता की, चाहे उसके लिये उसे कुछ समझोता करना पढ़े। याद रखें सेवा से बढ़कर पूजा नही। आप मदिंर मस्जिद जाऐ न जाऐं लेकिन अगर अपने बजुगी की खसकर बिमारी में सेवा करते हैं तो आप पुण्य के भागी बनेगें। आज जब आप घर मे बड़ो की सेवा करेगें तो बच्चों पर उसका प्रभाव होना स्वभाविक है व कल को आप की सेवा भी अवश्य होगी। इंसान तभी इंसान है जब वह एक दूसरे के काम आये व तभी जीवन जीने का मज़ा है।

याद रखें

परिवार में जब भी कोई बिमार हो जाता है तो कुछ लोगों का रवैया उनके प्रति उपेक्षा का हो जाता है, जैसे बिमार होने वाले ने कोइ अपराध किया हो। छोटे परिवार में व नौकरी पेशा परिवार में तो बीमार की कई बार ज्यादा ही उपेक्षा हो जाती है। कोई भी अपनी मर्जी से बिमार नहीं होता, न ही किसी को बिमार होने का शौक होता है। कभी न कभी पआप के साथ भी यह सब घट सकता है। ऐसे में क्या किया जाये?

–– घबराएं नहीं, न ही व्यक्ति को घबरानें दे। उसे दिलासा दें व तुरंत डाक्टर को दिखयें। कई बार थोड़ी उपेक्षा गंभीर परिणाम दे देती है।

––नौकरी महत्व रखती है, परन्तु परिवार का सदस्य उस से कहीं अधिक महत्व रक्षता है। अगर छुटी लेनी पड़ती है तो सोचें ना। अक्सर बूढे व्यक्ति को दवाईयों से अधिक जो उसके अपने होते हैंए उनके साथ की व सेवा की आवश्यकता होती है। मालिश का व शरीर दबाने का अपना ही महत्व है। इन से खून का प्रवाह तेज होता है व बीमार को अपनेपन का अहसास दीलाता है। इस सब को करने के लिये बच्चो व जवानों की आवश्यकता होती है।

Charties Should Be Without Vanity And Expectations.

Bhartendu Sood.

Buddha had just finished his sermons when the king of that province approached him desiring to donate land and huge wealth. Buddha remained on his seat and received that with one hand. The king took a seat close to Buddha. Then came the wealthiest landlord of that province and he too donated a large amount of money. Buddha didn't move from his place and took it with one hand. The rich person also sat next to the king. Then emerged a poor old woman from the crowd of large devotees and bowed before Buddha offering a handful of grain tied up in a small bundle. Much to the chagrin of both the king and the rich man, Buddha got up from his seat and took that with both hands.

When the king and the rich landlord asked the reason for this differential treatment, Buddha explained how they had given a small part of their holdings and their donations were imbued with vanity and expectations. Therefore I have taken them with one hand without moving from my seat. But, that poor woman donated everything what she had and she moved back in to the crowd. She had no desire for being known or acknowledged therefore I got up from my seat and accepted her donation with both hands"

Give not anything away as yours, but as that which is given to you by the divine power, for dispensing to the needy. He who comes to know this truth is a seer because he rise above ego, and the arrogance associated with the donor.

True charity is desire to be useful to others without thought of recompense. Charity given from earned money without any intention to earn glory is worthy of reckoning, irrespective of its magnitude .If the donor as well as the receiver is particular about this aspect then our religions and charitable institutions will continue to command respect. Buddha did not approve of hoarding wealth with desire and attachment, nor did he approve of each and every way of earning one's livelihood.

This is the story which the present day Charitable and Religious Institutions can take heart from who generally by ignoring the learned persons and devoted workers, go all out to honor the donor making huge donations of money with out any regard to his background and reputation.

In the Chandogya Upanishad also, there is a reference of the highly learned and fearless Cart driver Raikwa who on being showered with precious gifts by the king with a sole aim to tempt him to part with his spiritual knowledge tells the king, "Oh! King have neither pride nor vanity in the charities you dispense .Give not something as yours but as given to you by the divine power for dispensing to the needy. He who comes to know this truth is a seer because he rises above ego, false pride and the arrogance associated with the donor.

It is a wrong notion that charities detoxify the ill-gotten money. If part of the money earned by abominable means is donated it does not lend legitimacy to the wealth acquired. For example spurious drug manufacturer can't take solace from the part donation of his huge profits. Also making charity does not absolve one of the sins and misdeeds committed otherwise. As enunciated in Vedas, he or she will reap the fruits of his sins. No doubt, charity made by him will have its good reward. Manu has laid great stress on the means to acquire Artha . He has cautioned against the inflow of money earned by questionable means, whether it is a home or institution. Ingress of such money is bound to cause devastation rather than the intended good for which money is taken by the Charitable Institutions. At the same time Shastras also say that the receiver of the charities should exercise utmost prudence and circumspection in the acceptance of donations. Accept only if you need and accept only that much which is required. Excess money brings all evils with it and charities made out of honestly earned money with out any intention to earn glory are worthy of reckoning irrespective of their magnitude.

क्या नास्तिक को वेद आदि शास्त्र पढ़ने चाहिए

Bhartendu Sood

मेरा एक मित्र है जो कि नास्तिक है। वह अपने आप को नास्तिक कहने में फखर महसूस करता है। जब कि मैं हर चीज के लिए ईश्वर का धन्याबाद करने का आदि हो गया हूं और जब काम न भी बने तो यह मान कर चलता हूं कि ईश्वर जो भी करता है उस में हमारी भलाई छुपी होती है। वह मेरी इन बातों पर हंसता है। खैर एक दिन मैने उसे अंग्रेजी भाषा में लिखा महार्षि दयानन्द सरस्वती का अमुल्य ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश दिया। दो दिन बाद ही उसका फोन आ गया कि इसमें लिखा सब बेकार है आप अपनी पुस्तक मंगवा ले। मैने उसको गीता पढ़ने का सुझाव दिया परन्तु तब भी उसकी प्रतिक्रिया वही थी जो कि सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने के बाद थी।

मैने सोचना प्रारम्भ किया कि क्यो उसने दो अमूल्य शास्त्रों के बारे में ऐसी प्रतिक्रिया की। बहुत सोचने पर इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि जो भी धर्म से सम्बन्धित शास्त्र है उनका आनन्द लेने के लिए यह आवश्यक है कि हमारा ईश्वर पर विश्वास हो, हम यह मानते हो कि इस सृष्टि को बनाने वाला वह ईश्वर है और दुनिया कि हर चीज उसके अस्तित्व का एहसास करवाती है। हम यह मानते हो कि इस प्राणिजगत को बनाने वाला व संचालन करने वाला वह सर्वशक्तिमान ईश्वर ही है जो कि हम सब प्राणियों को प्राण देता है, पालता है व रक्षा करता है। सुख दुख, जन्म मृत्यु, सफलता बिफलता, यश कीर्ति , संजोग वियोग सब उस महान शक्ति के हाथ में है। हमारे प्रयत्न भी तभी सफल होते हैं जब उस महान प्रभु की कृपा होती है।

हमारे शास्त्र ईश्वर की स्तुती से भरे हुए होते है। परन्तु वह इन को क्या समझेगा जिसका ईश्वर पर विश्वास ही न हो। यह उसी प्रकार है जैसा कि हम किसी अन्धे को ताजमहल दिखाने ले जांए। बिना आंखों के वह ताजमहल के सौन्द्रय को क्या जान पायेगा। उसके के लिए तो ताजमहल दूसरे भवनों की तरह ही एक साधारण भवन है। हाथ लगाने पर वह कह दगा कि इसमें कुछ खास नहीं है।

दूसरा उदाहरण———मेरा आर्य समाज के सर्म्पक में रहने के कारण पुराणो और पुराणिक बातों पर तनिक भी विश्वास नहीं। मैं इन्हें कुछ स्वार्थी पण्डितों की कल्पना के सिवा कुछ नहीं मानता। यदि कोई मुझे पढ़ने को दे भी दे तो मैं यह कह कर किनारे रख देता हूं कि यह सब तो ढंकोसले है। कारण मेरा इस में विश्वास नहीं।

इसलिए मेरा मानना है कि यदि नास्तिक वेद शास्त्रों को पढ़ता है तो वह उनका ठीक मूल्यांकन नहीं कर सकता।

परन्तु यह भी सत्य है कि सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने के बाद गुरूदत नास्तिक से आस्तिक बन गए। यदि आप इस विषय पर प्रकाश डाल सकें तो मैं धन्याबादी हुंगा।

9217970381

कश्चित धीरः

उपनिषद कहते हैं हिम्मती लोग वही हैं जो वर्तमान के लिये जीते हैं और कायर वे हें जो भविष्य की चिन्ता के कारण हमेशा दुखी रहते हैं। बहुत से लोग जीवन का आनन्द इसलिए नहीं उठा पाते, क्योकिं वे हमेशा भविष्य की चिंता के कारण दुखी रहते हैं। यह उसी तरह है जैसे कि अगर हम अपनी छाया को पकड़ने की कोशिश करते हैं तो आगे बड़ने पर छाया भी आगे बड़ जाती है। इस प्रकार हमारा सम्पूर्ण जीवन व्यर्थ का संघर्ष बन कर रह जाता हैं।

वर्तमान का आनन्द हम उठाते नहीं है व भविष्य की चिन्ता से अपने आप को घेरे रखते हैं।

His Benevolence Is For All Creatures

Neela Sood

Chatrapati Shivaji, a great Maratha warrior was being taken around the fort which was under construction. A sense of pride was visible on Shivaji's face. Suddenly he stopped and remarked to his Minister, " Look, by constructing this huge fort I am filling the belly of hundreds of workers and artisans engaged in the construction work. Shivaji's guru when heard these words could smell that an element of arrogance had forced his entry in Shivaji also and if not corrected immediately it had the potential of becoming a big mole. He took a few steps to put himself close to shiva ji. Hardly they had moved a few steps when they saw a boulder, " Shiva will you remove this boulder ? *Kulguru* asked shiva. As Shiva moved that boulder, he saw hundreds of small insects moving briskly here and there. " Shiva, who is filling their bellies? " *Kulguru* asked him. Shivaji had understood what his guru wanted to say and touched his feet for correcting him at the right time..

It is the true story of Amritsar Punjab of the preparation days. A young widow would do petty jobs to bring up her two small sons. Once when she fell sick and could not arrange food for his sons, the children came crying to her "ma hunger is unbearable, do something" She took them in her lap and said " It is God who is giving food to creatures. You ask from Him and you'd definitely get. The small children took a paper and wrote their request on it. Thinking that the Postman will carry their letter to the almighty, they went to the nearby letterbox but due to the small height their hand was not reaching the opening though they were making repeated attempts. One gentleman who was watching this all reached out to them " Give this to me I will post " he said and took that letter from them, but when he saw that the letter was addressed to God, he became curious and read the contents. He understood everything and told them that till such time they are not on their feet, he'd take care of their food and education.

God is taking care of all creatures. We are wrong if we think that his benevolence is reserved only for those who remember him and offer their prayers to him.